इकाई 2 तुलनात्मक विधि और तुलना की कार्यनीतियाँ

संरचना

2.0 उद्देश्य

2.1 प्रस्तावना : तुलना क्या है

2.2 पद्धति पर कुछ विचार

2.3 तुलनात्मक पद्धति : तुलना क्यों

2.3.1 सामाजिक-वैज्ञानिक अनुसंधान

2.3.2 समाकलनात्मक चिंतन

2.4 तुलना की पद्धतियाँ

2.4.1 प्रयोगात्मक पद्धति

2.4.2 केस स्टडी

2.4.3 सांख्यिकीय पद्धति

2.4.5 ध्यान-केंद्रित तुलनाएँ

2.5 सारांश

2.6 मुख्य शब्द

2.7 संदर्भ

2.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

2.0 उद्देश्य

हम के लिए तुलना एक परिचित अभ्यास है। हमारे दैनिक जीवन के अधिकांश निर्णयों में, चाहे विक्रेता से फल और सब्ज़ियाँ खरीदना हो या एक पुस्तक या एक उपयुक्त महाविद्यालय और कैरियार का चयन करना हो, तुलना करना शामिल है। परन्तु, जब तुलना का प्रयोग सामाजिक और राजनीतिक परिघटनाओं के अध्ययन के लिए किया जाता है, तो 'पद्धति' के रुप में 'तुलना' में कुछ ऐसा होना चाहिए जो उसे, उस लक्ष्य के लिए, अन्य पद्धतियों से अधिक उपयुक्त बनाती है। इस उपयुक्तता का मूल्यांकन करने के लिए हमें सबसे पहले यह जानने की आवश्यकता है कि तुलनात्मक पद्धति क्या है और इसे अन्य पद्धतियों से कैसे अलग किया जा सकता है, जिनमें से कुछ तुलना भी करते है; उदाहरण के लिए, प्रयोगात्मक और सांख्यिकीय पद्धतियाँ। हमें तुलनात्मक पद्धति का ही प्रयोग क्यों करना चाहिए। हसे ध्यान में रखना भी महत्वपूर्ण है कि तुलना कैसे की जानी चाहिए या तुलना के लिए रणनीतियों की योजना कैसे बनाई जानी चाहिए। इस इकाई में हम इन मुद्दों की चर्चा करेंगे। इस इकाई को पढ़ने के बाद, आप निम्नलिखित की व्याख्या में सक्षम होंगे :

- तुलनात्मक पद्धति और अन्य पद्धतियों से वह किस प्रकार से भिन्न है।
- अन्य पद्धतियों के मुकाबले में तुलनात्मक पद्धति के सापेक्ष लाभ और असुविधाएँ।

- तुलना की विभिन्न पद्धतियाँ
- किस प्रकार तुलनात्मक पद्धति का प्रयोग सामाजिक और राजनीतिक परिघटनाओं की व्याख्या में किया जाता है।
- तुलनात्मक राजनीति के क्षेत्र में तुलनात्मक पद्धति के महत्व की व्याख्या।

2.1 प्रस्तावना

पिछले भाग में हमने देखा कि किस प्रकार तुलनाएँ हमारे दैनिक जीवन का हिस्सा हैं। परन्तु हममें से कोई भी एक शून्यस्थान में नहीं जीता। हमारे दैनिक जीवन को असंख्य अन्य जीवन आडे-तिरछे काटते हैं। हमारे परिवेश के बारे में हमारे अपने अनुभव और पर्यवेक्षण, दूसरों के अनुभव और पर्यवेक्षण द्वारा कई तरीकों से निर्मित और प्रभावित होते हैं। दूसरे शब्दों में, हमारे द्वारा समीप के विश्व का पर्यवेक्षण यह दर्शाएगा कि लोग और घटनाएँ, संबंधो के एक जालतंत्र में जुडे हुए हैं। ये संबंध घनिष्ट या भावनात्मक रुप से जुडे हो सकते हैं, जैसे, एक परिवार के भीतर या हमारे दैनिक जीवन के दौरान जैसे जालतंत्र का विस्तार होता है, तो व्यावसायिक (जैसे हमारे कार्य के स्थल पर) या अव्यक्तिगत (जैसे हम जिस बस में यात्रा करते हैं, उसमें हमारे सह-यात्रियों के साथ)। परन्तु ये संबंध या अंतर्संयोजनात्मकता, एक नियमितता, एक प्रतिमान या एक दैनिकता को दर्शा सकते हैं, उदाहरण के लिए, बस का दैनिक मार्ग, उसके प्रस्थान और आगमन के समय इत्यादि। यहाँ उद्देश्य ये दर्शाना है कि हालांकि प्रत्येक व्यक्ति को एक विशिष्ट दिनचर्या को अपनाते हुए देखा जा सकता है, वहीं समानान्तर रुप से, एक संचया या समुद्रित प्रभाव है, जहाँ ऐसे अनेक व्यक्तियों को इससे मिलती-जुलती दिनचर्या को अपनाने हुए देखा जा सकता है। हम ये कह सकते हैं कि इन व्यक्तियों के जीवन में नियमितता का एक प्रतिमान है, जो उनकी समानता की दृष्टि से तुलनीय है। अब, अगर समानताओं को संयोजित किया जा सकता है, तो अनियमितताओं या विषमताओं को भी आसानी से पहचाना जा सकता है। उनके जीवन की परिस्थितियों में समानताओं और विभिन्नताओं की छान-बीन करने के बाद समानताओं और विषमताओं, दोनों की व्याख्याएँ की जा सकती हैं। इसे उदाहरण द्वारा स्पष्ट करने के लिए, आइए हम एक आवासीय कॉलोनी की कल्पना करें जिसके अधिकांश पुरुष निवासी प्रातः 8 बजे एक चार्टर्ड बस में काम पर जाते हैं और शाम 6 बजे लौटते हैं। और शाम 5 बजे लौटते हैं। इस प्रकार मोटे तौर पर, कॉलोनी के निवासियों के दो समूह हैं जो व्यवहार के दो प्रकार के प्रतिमानों का प्रदर्शन करते हैं। प्रत्येक समूह के भीतर समानताओं और दोनों समूहों के बीच विषमताओं, इन दोनों के लिए व्याख्याएँ पाई जा सकती हैं। जबकि स्थितियों की समानताओं में समरुपता के लिए व्याख्याएँ मिलती हैं, समूहों के बीच अनियमितता या विषमताओं की व्याख्याएँ उन परिस्थितियों की अनुपस्थिति के रुप में की जा सकती हैं जो एक समूह में समानता की अनुमति देती हैं, उदाहरण के लिए, ये पाया जा सकता है कि व्यक्ति बस से यात्रा करते हैं, उनके बीच चार्टर्ड बस में अपने दफ्तरों को जाने के अलावा और भी कई सामान्य बातें हैं, जैसे, एक ही दफ्तर में कार्य, निजी वाहनों का अभाव, दफ्तर में लगभग एक जैसे पद/ओहदा, एक ही मार्ग पर दफ्तरों का ठिकाना इत्यादि। जो अपनी कारों से यात्रा करते हैं, वे भी अपने

समूह के अन्दर स्थितियों की समानताओं का प्रदर्शन करेंगे। समूहों के बीच भिन्न प्रतिमानों की व्याख्या, उन परिस्थितियों की अनुपस्थिति के रुप में की जा सकती है जो दो समूहों में समानताओ की अनुमति देती हैं, उदाहरण के लिए, कार समूह वाले निवासी भिन्न दफ्तरों को जा रहे होंगे जो उसी बस मार्ग पर नहीं आते; वे एकमात्र लोग हो सकते हैं जिनके पास कारें हैं, उनके दफ्तरों में उनका और ऊँचा ओहदा हो सकता है, इत्यादि। व्याख्याएँ अनेक हो सकती हैं और अनेक अन्य चरों पर आधारित भी, जैसे जाति, लिंग, राजनीतिक विचार इत्यादि। समानताओं और विषमताओं के इस पर्यवेक्षण के आधार पर एक कारणात्मक संबंध के रुप में प्रस्ताव रखे जा सकते हैं, उदाहरण के लिए, वाहन चलाकर काम पर जाने वाले पुरुष/महिलाएँ ऐसा इसलिए करते हैं क्योंकि उनके कार्य के स्थान के लिए चार्टर्ड बसें कार्य के लिए वाहन चलाकर जाने की संभावना उनसे अधिक है जो वाहनों के मालिक नहीं हैं या उच्चवर्गीय महिलाओं की अपने कार्यस्थान तक वाहन चलाकर जाने की संभावना अधिक है इत्यादि। आइए, इस अतिसरलीकृत उदाहरण से उन जटिल तरीकों की ओर बढें जिनमें समाजशास्त्री तुलनाओं का प्रयोग करते हैं।

2.2 पद्धति पर कुछ विचार

तुलनात्मक पद्धति का अध्ययन करने से पहले, आइए हम ये देखें कि यथार्थ में एक 'पद्धति' क्या है; और उसे क्यों इतना महत्वपूर्ण माना जाता है। जैसा कि हमें अपने अनुभवों से पता है कि पद्धति किसी वस्तु को सहजता से निष्पादित करने का एक उपयोगी, सहायक और शिक्षाप्रद तरीका है। उदाहरण के लिए, सिमटने वाले फर्नीचर का एक हिस्सा, एक निर्देशक पुस्तिका के साथ आता है जो उसे खड़ा करने के लिए विभिन्न कदमों के माध्यम से हमारा मार्गदर्शन करती है। इसी प्रकार एक परिघटना का अध्ययन करते समय पद्धति कार्य को करने के तौर-तरीकों की ओर इशारा करेगी। परन्तु, सिमटने वाले फर्नीचर के हमारे उदाहरण की तरह न होकर, हमें संभवतः आरंभ में ही अपने अन्वेषण के अंतिम स्वरुप या परिणामों के बारे में जानकारी नहीं मिल सकती। हमारे पास शायद अंतिम परिणाम की ओर हमारा मार्गदर्शन करने वाली एक परिशुद्ध निर्देशक पुस्तिका भी न हो। हमारे पास केवल फर्नीचर के हिस्से और उसे खड़ा करने के लिए औज़ार होंगे। दूसरे शब्दों में, "अवधारणाएँ" और "तकनीक"। इन अवधारणाओं (विचार, चिंतन, और धारणाएँ) और तकनीकों (डेटा/आँकडे एकत्रित करने के तरीके) का एक निश्चित परिघटना के बारे में अधिक जानकारी, समझ या व्याख्या के लिए, विशिष्ट तरीकों से प्रयोग करना होगा। इस प्रकार, ये कहा जा सकता है कि डेटा/आंकडों के संबंध में विशिष्ट अवधारणाओं के प्रयोग करने के तरीकों का संगठन ही 'पद्धति' है। निःस्संदेह, स्वयं डेटा/आंकडों को एकत्रित करने की रीति को तैयार करना होगा। जिन अवधारणाओं को कार्यान्वित या जिनका अध्ययन करना है, उनके बारे में विचार करना होगा। अंत में, इन सबको संगठित करना होगा ताकि डेटा/आंकडों की प्रकृति और जिस तरीके से उसे एकत्रित किया जाता है और अवधारणा को प्रयोग में लाना इस प्रकार हो कि हम जिसका अध्ययन करना चाहते हैं, उसका अध्ययन परिशुद्धता के एक स्तर के साथ कर पाते हैं। एक वैज्ञानिक अन्वेषण में पद्धति की परिशुद्धता और यथार्थता पर काफी बल दिया जाता है। परन्तु, अपनी

विषय वस्तु की प्रकृति के कारण, समाजशास्त्रों को ऐसी पद्धतियों के बारे में सोचना पडता है जो प्रयोगशालाओं या अन्य नियंत्रित स्थितियों में हो रहे वैज्ञानिक परीक्षणों की परिशुद्धता के निकट आते हैं। फिर भी अनेक विद्वान ये अनुभव नहीं करते कि तथाकथित "वैज्ञानिक अनुसंधान" के बारे में इतनी पूर्वव्यस्तता होनी चाहिए। इस विषय के बारे में विद्वानों के जो भी विचार हों, सभी अध्ययनों में चिंतन, अन्वेषण और अनुसंधान में फिर भी एक 'पद्धति' होती है। अपने अध्ययन के लिए विद्वानों द्वारा अनेक पद्धतियों-तुलनात्मक, ऐतिहासिक, प्रयोगात्मक, सांख्यिकीय इत्यादि-का प्रयोग किया जाता है। ये कहा जा सकता है कि ये सभी पद्धतियाँ विभिन्न मात्राओं में तुलनाओं का प्रयोग कर सकती हैं क्योंकि तुलनात्मक पद्धति पर तुलनात्मक राजनीति का एकाधिकार नहीं है। इसका प्रयोग ज्ञान के सभी क्षेत्रों में भौतिक, मानवीय और सामाजिक परिघटना के अध्ययन के लिए किया जाता है। समाजशास्त्र, इतिहास, मानव विज्ञान, मनोविज्ञान, साहित्य इत्यादि, इसका प्रयोग समान विश्वास के साथ करते हैं। इन विषयों ने तुलनात्मक पद्धति का प्रयोग उन अध्ययनों को उत्पन्न करने के लिए किया है जिनका उल्लेख विभिन्न प्रकार से "पार-सांस्कृतिक" (जैसा कि मानव विज्ञान और मनोविज्ञान में) और "पार-राष्ट्रीय" (जैसे कि राजनीति शास्त्र और समाजशास्त्र में) के रुप में किया जाता है, जिससे ये प्रतीत होता है कि वे विभिन्न क्षेत्रों पर बल दे रहे हैं।

बोध प्रश्न 1

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का प्रयोग करें

ii) इकाई के अन्त में अपने उत्तर के लिए संकेतों को देखें

1) पद्धति क्या है? आपके विचार में पद्धति अनुसंधान का एक महत्वपूर्ण हिस्सा क्यों है?

.....

.....

.....

.....

.....

2.3 तुलनात्मक पद्धति : तुलना क्यों

2.3.1 सामाजिक.वैज्ञानिक अनुसंधान

तुलनात्मक पद्धति को, एक "भूमिगत सिद्धांत" को विकसित करने, परिकल्पनाओं के परीक्षण, कारण कार्य संबंधों का अनुमान लगाने और विश्वसनीय सामान्यीकरणों को उत्पन्न करने के आधार के रुप में समानताओं और विषमताओं के अध्ययन के रुप में देखा गया। अनेक सामाजिक वैज्ञानिकों का मानना है कि अनुसंधान वैज्ञानिक रुप से संगठित होना चाहिए। वे मानते हैं कि तुलनात्मक पद्धति उन्हें "वैज्ञानिक" अनुसंधान के संचालन के लिए सर्वोत्तम साधन प्रदान करती है, अर्थात, अनुसंधान जिसकी विशेषताएँ हैं परिशुद्धता,

मान्यता, विश्वसनीयता और सत्यापनीयता और कुछ मात्रा में पूर्वानुमेयता। अमेरिकी राजनीति शास्त्री जेम्स कोलमैन ने, उदाहरण के लिए, अपने विद्यार्थियों को अक्सर याद दिलाया, "आप यदि तुलना नहीं कर रहे तो आप वैज्ञानिक नहीं हो सकते । "इसी प्रकार, स्वॉनसन ने इस बात पर बल दिया कि बिना तुलनाओं के "वैज्ञानिक चिंतन और समस्त वैज्ञानिक अनुसंधान" के बारे में सोचना "अनिवार्य" था (स्वॉनसन, 1971, पृ. 145)।

जबकि भौतिक विज्ञानों में तुलनाएँ प्रयोगशालाओं में ध्यानपूर्वक नियंत्रित स्थितियों में की जाती हैं, समाजशास्त्रों में उन स्थितियों में, जो प्रयोगशाला की स्थितियों को दोहरा सकें, परिशुद्ध परीक्षण संभव नहीं है। उदाहरण के लिए, यदि एक समाजशास्त्री निर्वाचन प्रणालियों और राजनीतिक दलों की संख्या के बीच संबंध का अध्ययन करना चाहे तो वह अपनी निर्वाचन प्रणाली को बदलने का निर्देश दे सकता है और न ही जनता को एक निश्चित तरीके से व्यवहार करने का आदेश दे सकता है। और न ही एक सामाजिक या राजनीतिक परिघटना को एक प्रयोगशाला में दोहरा सकता है जहाँ परीक्षण किए जा सकते हैं। अतः जहाँ एक समाजशास्त्री एक वैज्ञानिक तरीके से कार्य करने के लिए अपने को विवश महसूस कर सकता है, वहीं, जिसे "वैज्ञानिक" अन्वेषण के रुप में स्वीकार किया जाता है, उसे सामाजिक परिघटनाएँ शायद अनुमति न दें। इसके बावजूद वह "मामलों" (केस) का अध्ययन कर सकता है, अर्थात् वास्तव में मौजूद राजनीतिक दलों का, और उनकी तुलना कर सकता है, अर्थात् उनके संबंध के अध्ययन का एक तरीका निकाल कर जैसे कि परिकल्पना में हल किया गया है, निष्कर्ष निकाल कर और सामान्यीकरणों की प्रस्तुती द्वारा।

इस प्रकार, वैज्ञानिक दृष्टि से प्रयोगात्मक पद्धति से कमज़ोर होने के बावजूद, तुलनात्मक पद्धति को एक वैज्ञानिक पद्धति के सबसे निकट माना जाता है, जो सामाजिक परिघटनाओं की व्याख्याएँ खोजने के लिए और सैद्धांतिक प्रस्तावों और सामान्यीकरण प्रस्तुत करने के लिए सर्वश्रेष्ठ संभव अवसर प्रदान करती है। अब आप ये प्रश्न पूछ सकते हैं कि तुलनात्मक पद्धति को क्या वैज्ञानिक बनाती है। सारटोरी ने दावा किया कि "नियंत्रण प्रकार्य" या जाँच को प्रणाली, जो वैज्ञानिक अनुसंधान का अभिन्न हिस्सा है, और प्रयोगशाला प्रयोग का अनिवार्य अंग, समाजशास्त्रों में उसे केवल तुलनाओं के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है। आगे बढते हुए उसका यह प्रस्ताव है कि चूंकि "नियंत्रण प्रकार्य" का प्रयोग केवल तुलनात्मक पद्धति के माध्यम से हो सकता है, समाहशास्त्रों में तुलनाएँ अपरिहार्य हैं। अपने नियंत्रणकारी/सैद्धांतिक प्रस्तावों को बनाने या भविष्यवाणियाँ करने वाली निश्चित परिघटनाओं की व्याख्या करने वाले सैद्धांतिक कथनों के लिए तुलनाओं का वैज्ञानिक महत्व है। और उसके लिए भी जिसे वह "दूसरों के अनुभव से सीखना" कहता है। इस संदर्भ में यह बताना महत्वपूर्ण है कि तुलनात्मक पद्धति में भविष्यवाणियों की प्रकृति का एक संभाग्य कारण-कार्य संबंध है। इसका अर्थ ये है कि ये अपने परिणामों को केवल संभावनाओं या संभावयताओं के रुप में अभिव्यक्त कर सकते हैं, अर्थात् स्थितियों के एक निश्चित समुच्चय द्वारा एक प्रत्याशित परिणाम दिया जाना संभव है। ये वैज्ञानिक अनुसंधान में निर्धारक कारण-कार्य संबंध से भिन्न है जो निश्चितता पर बल देता है अर्थात् स्थितियों का एक निश्चित समुच्चय प्रत्याशित परिणाम अवश्य उत्पन्न करेगा।

2.3.2 समाकलनात्मक चिंतन

जबकि कुछ सामाजिक वैज्ञानिक एक वैज्ञानिक अन्वेषण के विकास के लिए तुलनात्मक पद्धति का प्रयोग करते हैं, कुछ अन्य के लिए, परन्तु, तुलनाओं के साथ चिंतन विशिष्ट सामाजिक और राजनीतिक परिघटना के विश्लेषण का एक अभिन्न हिस्सा है। स्वॉनसन, जिसने यह दावा किया है कि "तुलनाओं के बिना चिंतन, अनिवार्य है", इस उपागम का प्रतिनिधि है। उसके अनुसार, "किसी को आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि तुलनाएँ, अंतर्निहित और सुव्यक्त, सामाजिक वैज्ञानिकों के कार्य में व्याप्त होती हैं और आरंभ से ऐसा करती आई हैं : भूमिकाओं, संगठनों, समुदायों, संस्थाओं, समाजों और संस्कृतियों में तुलनाएँ" (स्वॉनसन, 1971, पृ0 145)। प्रसिद्ध जर्मन समाजशास्त्री, एमिल दुर्खीम भी पुष्टि करता है कि तुलनात्मक पद्धति अनुसंधान (समाजशास्त्रीय) को केवल वर्णनात्मक रहने से रोकने में सक्षम बनाती हैं (दुर्खीम, 1984, पृ0 139)। स्मेलसर ने भी दावा किया कि बिना तुलनाओं के वर्णन काम नहीं आते। वह प्रमाण देता है कि "साधन रुप से आबाद" और "लोकतांत्रिक" जैसे सरल वर्णनात्मक शब्द, स्थितियों के एक ऐसे जगत की पूर्वकल्पना करते हैं जो अधिक या कम आबाद हैं या अधिक या कम लोकतांत्रिक हैं और एक स्थिति का बयान/वर्णन केवल दूसरी के संबंध/तुलना में किया जा सकता है (स्मेलसर, 1976 : 3)। अनेक विद्वानों का यह मानना है कि इस प्रकार की "एक जगत की परिकल्पना" जिसमें संबंधों के एक समुच्चय (सेट) के अन्तर्गत एक वर्णनात्मक वर्ग को रखा जा सकता है, उसका बेहतर विश्लेषण करने में हमारी मदद करती है। अतः मनोरंजन मोहन्ती, परिघटनाओं में केवल समानताओं और विषमताओं को न देखते हुए, संबंधों पर बल डालने का प्रयास करता है। अवरोक्त या उसके शब्दों में "तुलना और व्यक्तिरेक उपागम" (तुलना करना और अंतर बनाना उपागम) अंततः " द्वि भागीकरण में एक अभ्यास, ध्रुवित करने के लिए एक क्रिया" बन कर रह जाएगा। दूसरे शब्दों में, ऐसा अभ्यास प्रतिरुपों का वर्गीकरण एकाकी कक्षों के समूहों में करेगा, जिसके फलस्वरुप, एक तुलनात्मक अभ्यास केवल समूहों के अन्दर समानताओं और उनके बीच विषमताओं का पता लगाना मात्र बन जाएगा। एकता और विरोध के संबंधों की पहचान करने के लिए हमें अपने प्रश्नों को बदलना होगा। इसका अर्थ ये होगा कि पूछे गए प्रश्न ऐसे नहीं होने चाहिए कि उनके उत्तर केवल समानताओं और विषमताओं को ही नहीं बल्कि" उनके बीच जो संबंध है " उसे भी स्थापित करें। केवल तभी जाकर संयुक्त राज्य अमेरिका और ब्रिटेन जैसी राजनीतिक प्रणालियों की तुलनात्मकता को समझा जा सकता है, जो उदाहरण के लिए, अपनी सरकारों के स्वरुप की दृष्टि से भिन्न हैं (क्रमशः, अध्याक्षत्मक और संसदीय स्वरुप)।

केवल समानता और विषमता के संकेतकों को ही न देखते हुए, संबंधों को देखने की आवश्यकता का भी दावा स्मेलसर ने किया है। स्मेलसर का मानना है कि अक्सर एक तुलनात्मक अभ्यास केवल भिन्नताओं या विषमताओं के कारणों को खोजता रह जाता है और ऐसी व्याख्याएँ प्रस्तुत करता है जो अक्सर "विकृतियाँ" होती हैं। "नवीन" और "अद्वितीय" के साथ दूसरे शब्दों में, वह जो दूसरों से भिन्न या अलग दिखता है, आकर्षण या तन्मयता मानव प्रकृति का हिस्सा हमेशा रही है। ऐतिहासिक दृष्टि से, एक ऐसा प्रवृत्ति रही है जो या तो एक पूववर्ती युग के 'शुद्ध' अवशेषों के रुप में इन भिन्नताओं की प्रशंसा करती है अथवा

जिसे सामान्य व्यवहार माना जाता है, उसके विचलनों के रुप में देखती है। इस प्रकार समानताओं और भिन्नताओं पर बल दिए जाने के परिणामस्वरुप समानताओं या एकरुपताओं को मानकों के रुप में और विषमताओं और रुपांतरों को मानक के 'विचलन' के रुप में देखे जाने की संभावना हो सकती है। ऐसे विचलनों के लिए प्रस्तुत की गई व्याख्याएँ केवल 'विकृतियाँ' नहीं हो सकती बल्कि अक्सर द्विचर

प्रतियोगों, पदानुक्रमों या यहाँ तक कि आदर्श (अच्छा) और विपथगमी (बुरा) के रुप में वर्गीकरणों या वर्गों के श्रेणीकरणों का कारण बनती हैं। असमान संबंधों की एक प्रणाली में भिन्नताओं और उनके कारणों के आरोपण का परिणाम अक्सर भिन्न समझे जाने वाले समूहों को अधिकारों से वंचित करना होता है। हमने उपनिवेशवाद के इतिहास में देखा है कि उपनिवेशों की जनता को स्वतंत्रता और स्व-शासन के अधिकार से वंचित किया गया था। उपनिवेशवादी राष्ट्र ने इस वंचन को न्यायसंगत ठहराने के लिए पराधीन जनसंख्या को स्व-शासन के लिए असमर्थ बनाया क्योंकि उसकी सामाजिक संरचनाएँ और धार्मिक विश्वास भिन्न थे। भिन्न की स्थिति का निरुपण यहाँ शक्ति के प्रेक्षण स्थल (नज़रिए) से आया-उपनिवेशवादी राष्ट्रों के नज़रिए से। ऐसी स्थितियों में द्विचर प्रतियोग, जैसे पश्चिम और पूर्व, ऐसे राष्ट्रों या लोगों की ओर इशारा कर सकते हैं जिनका वर्णन न केवल भिन्न विशेषताओं (गुणों) से युक्त लोगों के रुप में किया जाता है बल्कि समय की दृष्टि से भी जिनके पृथक अस्तित्व हैं। इस प्रकार, जहाँ एक ओर, उपनिवेशवादी ब्रिटिश को आधुनिकीकरण की एक अवस्था तक पहुँचे हुओं के रुप में देखा जा रहा था, वहीं पराधीन भारतीयों को समयहीनता की एक स्थिति में रहते हुए देखा जाता था, दूसरे शब्दों में, एक पिछडे हुए अतीत में कैद। फिर भी, ऐतिहासिक दृष्टि से, हम एक ऐसे विश्व में रहे हैं, जिसकी विशेषताख् एरिक वुल्फ के शब्दों में अंतः संबंध है। इस प्रकार, संबंधों की खोज करने के आग्रह को एरिक वुल्फ द्वारा महत्व दिया जाता है, जिसकी कृति, इस धारणा का सुधार करती है कि राष्ट्रों ने किया है जबकि अन्य राष्ट्र केवल मौन दर्शक थे। वुल्फ यह दर्शाता है कि ऐतिहासिक दृष्टि से अंतः संबंध राज्यों और राष्ट्रों के जीवन का तथ्य रहे हैं और अब भी कायम हैं (वुल्फ, 1982)। इसका अर्थ ये है कि संबंध को खोजना न केवल संभव है ; बल्कि ऐसे अतःसंबंधों की अवहेलना करना वास्तव में, ऐतिहासिक दृष्टि से, अमान्य होगा।

बोध प्रश्न 2

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का प्रयोग करें

ii) इकाई के अन्त में अपने उत्तर के लिए संकेतों को देखें

1) सामाजिक-वैज्ञानिक अनुसंधान के उद्देश्यों की पूर्ति में तुलनाएँ कैसे सहायता करती हैं?

.....

.....

.....

.....

2.4 तुलना की पद्धतियाँ

राजनीति शास्त्र के अध्ययन में, विद्वानों ने अनेक प्रकार की तुलनात्मक पद्धतियों का प्रयोग किया है। व्यापक रुप से प्रयोग की जाने वाली तुलना की कुछ पद्धतियाँ इस प्रकार है :

2.4.1 प्रयोगात्मक पद्धति

यद्यपि प्रयोगात्मक पद्धति का समाजशास्त्रों में सीमित उपयोग है, फिर भी ये वो मॉडल या प्रतिमान उपलब्ध करती है जिस प्रकार अनेक तुलनावादी अपने अध्ययनों को आधारित करने की अभिलाषा करते हैं। सरल शब्दों में, प्रयोगात्मक पद्धति दो स्थितियों के बीच एक कारणात्मक संबंध स्थापित करना चाहती है। दूसरे शब्दों में, परीक्षण का लक्ष्य यह सिद्ध करना है कि एक स्थिति एक दूसरी स्थिति को उत्पन्न करती है या दूसरी स्थिति को एक निश्चित तरीके से प्रभावित करती है। उदाहरण के लिए, यदि कोई इसका अध्ययन/व्याख्या करना चाहे कि एक विशाल-समूह समायोजन में, बच्चों में, अंग्रेजी में उनकी अभिव्यक्ति की योग्यता की दृष्टि से अंतर क्यों है, तो अनेक कारकों को इस क्षमता को प्रभावित करते हुए देखा जा सकता है, अर्थात् सामाजिक पृष्ठभूमि, भाषा में निपुणता, परिवेश से सुपरिचय इत्यादि। अन्वेषक इन सभी कारकों के प्रभाव का अध्ययन कर सकता है या इनमें से किसी एक का या कारकों के एक सम्मिश्रण का भी। वह फिर उन स्थितियों/कारकों को अलग करता है जिनके प्रभाव का वह अध्ययन करना चाहता है और इसके परिणामस्वरुप प्रत्येक स्थिति की भूमिका को सुनिश्चित करता है। जिस स्थिति के प्रभाव को मापना है और जो अन्वेषक द्वारा संचालित किया जाता है, वह स्वतंत्र चर है, उदाहरण के लिए, सामाजिक पृष्ठभूमि इत्यादि। वह स्थिति, जिस पर प्रभाव का अध्ययन किया जाना है, वह इस प्रकार, अश्रित चर है। अतः अभिव्यक्ति की योग्यता पर सामाजिक पृष्ठभूमि के प्रभाव के अध्ययन के लिए रुपांकित एक प्रयोग में, सामाजिक पृष्ठभूमि स्वतंत्र चर होगा और अभिव्यक्ति की योग्यता अश्रित चर। अन्वेषक एक परिकल्पना तैयार करता है जिसे दो स्थितियों के बीच संबंध के रुप में वर्णित किया जाता है जिसका परीक्षण उस प्रयोग में किया जाता है, अर्थात् उच्चतर सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि से आने वाले बच्चे विशाल-समूह समायोजना में अंग्रेजी में अभिव्यक्ति की बेहतर योग्यता का प्रदर्शन करते हैं। प्रयोग के परिणाम अन्वेषक को अपने निष्कर्षों की व्यावहारिता के संबंध में सामान्य पस्ताव प्रस्तुत करने में और अन्य पूर्व अध्ययनों से उनकी तुलना करने में सक्षम बनाएँगे।

2.4.2 केस स्टडी

एक केस स्टडी, जैसा कि इसका नाम संकेत देता है, एक एकल केस (मामले) का गहराई से अध्ययन पर ध्यान केंद्रित करती है। इस अर्थ में, जबकि पद्धति अपने आम में पूरी तरह से तुलनात्मक नहीं है, यह डेटा (आंकडे) उपलब्ध करती है (एकल केस या मामलों पर) जो सामान्य पर्यवेक्षणों का आधार बन सकता है। इन पर्यवेक्षणों का प्रयोग, अन्य 'केस' के साथ तुलना करने के लिए और सामान्य व्याख्याएँ प्रस्तुत करने के लिए, किया जा सकता है। केस स्टडीज़ फिर भी, एक असंगत तरीके से 'विशिष्टता' या जिन्हे 'विपथगामी' कहा जाता है, या असामान्य केस उन पर बल दे सकता है। उदाहरण के लिए, तुलनावादियों में ये प्रवृति हो

सकती है कि ऐसे प्रश्नों का अनुसंधान करें कि संयुक्त राज्य अमेरिका में एक समाजवादी दल क्यों नहीं है बजाय इसके कि अधिकांश पश्चिमी लोकतंत्रों सहित, स्वीडन में यह दल क्यों है। अलेक्स-डी-टॉकविल के शास्त्रीय अध्ययनों, 18 वीं शताब्दी के फ्राँस (द ओल्ड रेजीम एंड द फ्रेंच रेवल्यूशन, 1856) और 19 वीं शताब्दी के संयुक्त राज्य अमेरिका (डेमॉक्रेसी इन अमेरिका खंड 1, 1835) का हम संक्षेप में अध्ययन करेंगे ये दर्शाने के लिए कि एकल केस पर केंद्रण द्वारा तुलनात्मक व्याख्याएँ कैसे हो सकती हैं। उसके दोनों अध्ययन भिन्न प्रश्न पूछते हुए प्रतीत होते हैं। फ्राँस के संदर्भ में, वह ये स्पष्ट करने का प्रयास करता है कि 1789 की फ्रेंच क्रांति क्यों हुई और संयुक्त राज्य अमेरिका के संदर्भ में, वह वहाँ सामाजिक समानता की स्थितियों के कारणों और परिणामों पर ध्यान देता हुआ दिखाई देता है। यद्यपि इन दोनोंकृतियों के बीच विषय की आधारभूत एकता है। यह एकता, आंशिक रुप से दोनों में, मिलते- जुलते वैचारिक मुद्दों में टॉकविल की पूर्वव्यस्तता के कारण है, अर्थात् समानता और असमानता तानाशाही और स्वतंत्रता तथा राजनीतिक स्थिरता और अस्थिरता और सामाजिक संरचना तथा सामाजिक परिवर्तन पर उसके विचार। साथ ही, दोनों अध्ययनों की बुनियाद में कुलीनतंत्र और लोकतंत्र, असमानता से समानता की ओर पश्चिमी ऐतिहासिक संक्रमण की निष्ठुरता के संबंध में उसका दृढ़ विश्वास भी है। अन्ततः यह तथ्य है कि इन दोनों अध्ययनों में दूसरा राष्ट्र एक 'अनुपस्थित' केस या प्रतीक निर्देश्य के रुप में कायम रहता है, और यही इन व्यक्तिगत कृतियों को तुलनात्मक बनाते हैं और कुछ लोगों के अनुसार, एक एकल तुलनात्मक अध्ययन बनाते हैं। इस प्रकार, अमेरिकी समाज का उसके द्वारा विश्लेषण, फ्रेंच समाज पर उसके परिप्रेक्ष्य द्वारा प्रभावित हुआ और यही विपरीत क्रम से भी हुआ। अमेरिकी केस को 'जन्म से लोकतंत्र' के एक 'शुद्ध' केस के रुप में देखा गया, जहाँ समानता की दिशा में सामाजिक विकासक्रम 'लगभग अपनी प्राकृतिक सीमाओं' तक पहुँच चुका था, जिसके फलस्वरुप राजनीतिक स्थिरता, उसके विशाल मध्य वर्ग में सापेक्ष वंचन की भावना की क्षीणता और परिवर्तन के प्रति एक रूढिवादी दृष्टिकोण की स्थिति उत्पन्न हुई। फ्रैंच केस एक कुलीनतंत्र था (पदानुक्रमिक असमानताओं की एक प्रणाली) जिसने 18 वीं शताब्दी में एक संक्रमण की अवस्था में प्रवेश किया था, जिसमें असमानता के साथ समानता की अपेक्षाओं और इच्छा के मिश्रण की स्थितियाँ थी, जो कुलीनतंत्र और समानता के दो सिद्धांतों के अस्थिर मिश्रण में परिणत हुई, जो तानाशाही की ओर ले गई और जिसका समापन 1789 की क्राँति में हुआ। इस प्रकार, टॉकविल की व्यक्तिगत केस की अद्वितीय केस-स्टडी वास्तव में फ्राँस और संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा अपनाए गए विभिन्न ऐतिहासिक मार्गों की व्याख्या करने के लिए ऐतिहासिक बलों की परस्पर क्रिया के एक जटिल प्रतिमान (मॉडल) के अन्तर्गत राष्ट्रीय विषमताओं और समानताओं का अध्ययन था।

2.4.3 सांख्यिकीय पद्धति

सांख्यिकीय पद्धति वर्गों और चरों का प्रयोग करती है जो मात्रात्मक हैं या जिनका प्रतिनिधित्व अंको/संख्या द्वारा किया जा सकता है, उदाहरण के लिए, मतदान प्रतिमान, सार्वजनिक व्यय, राजनीतिक दल, कुल मतदान, शहरीकरण, जनसंख्या वृद्धि। यह समानान्तर रुप से अनेक चरों के प्रभावों संबंधों के अध्ययन के लिए अद्वितीय अवसर प्रदान करता है। परिशुद्ध डेटा (आंकडों) को एक

सुगठित और दृष्ठिगत रुप से प्रभावी तरीके से प्रस्तुत करने में यह लाभकारी है जिसके कारण समानताएँ और विषमताएँ संख्यात्मक प्रतिनिधित्व के माध्यम से दृष्ठिगोचर होते हैं। यह तथ्य कि अनेक चरों का अध्ययन एक साथ किया जा सकता है, संबंध की दृष्टि से जटिल व्याख्याओं को खोजने का भी अद्वितीय अवसर प्रदान करता है। सांख्यिकीय पद्धति का प्रयोग दीर्घकालीन प्रवृत्तियों और प्रतिमानों की व्याख्या और तुलना में तथा भावी प्रवृत्तियों के बारे में भविष्यवाणियों को प्रस्तुत करने में भी सहायक है। उदाहरण के लिए, कुल मतदान और आयु-वर्गों की सांख्यिकीय तालिकाओं के विश्लेषण के माध्यम से आयु और राजनीतिक सहभागिता के बीच संबंध का अध्ययन किया जा सकता है। लम्बी अवधियों में इस डेटा (आंकडों) की तुलना, या अन्य देों/राजनीतिक प्रणालियों में मिलता-जुलता डेटा, या धार्मिक समूहों, सामाजिक वर्ग और आयु की दृष्टि से कुल मतदान को प्रदर्शित करने वाला डेटा, जटिल सामान्यीकरणों के निर्माण में हमारी सहायता कर सकता है, उदाहरण के लिए मध्यवर्गीय हिन्दू, 25 और 30 की आयु के बीच के पुरुष मतदाता सर्वाधिक विपुल मतदाता हैं। पार-राष्ट्रीय तुलनाएँ ऐसे जाँच परिणाम दे सकती हैं जैसे, 25 से 30 की आयु के बीच की मध्यवर्गीय महिलाओं द्वारा भारत जैसे विकासशील राष्ट्रों की तुलना में, पश्चिमी की उपयोगिता इसकी सापेक्ष सुलभता में है जिसके साथ ये विभिन्न चरों के साथ निपटती है। परन्तु यह संपूर्ण उत्तर देने में या पूरी तस्वीर प्रस्तुत करने में असफल हो जाती है। फिर भी, उन संबंधों और उन व्यापक श्रेणियों के बारे में जिनका प्रयोग सांख्यिकीय पद्धति अपने संख्यात्मक प्रतिनिधित्व को सुगम बनाने के लिए प्रयोग करती है, अधिक व्यापक व्याख्याएँ देने के लिए गुणात्मक विश्लेषण के साथ इस पद्धति का प्रयोग किया जा सकता है।

2.4.4 ध्यान.केंद्रित तुलनाएँ

ये अध्ययन राष्ट्रों की एक छोटी संख्या को लेते हैं, अक्सर केवल दो (युग्मित या द्विआधारी तुलनाएँ) और प्रायः इन राष्ट्रों की राजनीति के निश्चित पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करते हैं, बजाय सभी पहलुओं पर। विभिन्न राष्ट्रों में इस पद्धति के माध्यम से लोकनीतियों का सफलतापूर्वक तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। लिप्सेट दो प्रकार के द्विआधारी या युग्मित तुलनाओं के बीच अंतर बनाना है–निहित और सुस्पष्ट। निहित द्विआधारी तुलना में, अन्वेषक का अपना राष्ट्र, जैसे टॉकविल द्वारा अमेरिका का अध्ययन, संदर्भ का कार्य कर सकता है। सुस्पष्ट युग्मित तुलनाओं में, तुलना के लिए दो स्पष्ट केस (राष्ट्र) होते हैं। इन दो राष्ट्रों का अध्ययन उनके विशिष्ट पहलुओं के संबंध में किया जा सकता है, उदाहरण के लिए, भारत और चीन में जनसंख्या नियंत्रण की नीति या दोनों देशों की संपूर्णता में, उदाहरण के लिए, आधुनिकीकरण की प्रक्रिया के संबंध में। अवरोक्त, (बाद वाला अध्ययन) दो केस के समानान्तर अध्ययन की ओर जा सकता है जिसमें संबंध के अध्ययन के लिए बहुत कम गुंजाइश होगी।

2.4.5 ऐतिहासिक पद्धति

ऐतिहासिक पद्धति को अन्य पद्धतियों से इस प्रकार अलग किया जा सकता है कि वह कारणात्मक या कारण संबंधी व्याख्याओं को खोजता है जो ऐतिहासिक दृष्टि से संवेदनशील होते हैं। एरिक वुल्फ इस बात पर बल देता है कि कोई भी अध्ययन जो समाजों और मानवीय क्रिया के कारणों को समझने का प्रयास

करता है, वह केवल समस्याओं के तकनीकी हल जो तकनीकी शब्दावली में प्रस्तुत किए जाने हों, उनकी खोज नहीं कर सकता। महत्व की बात ये थी कि यएक विश्लेषणात्मक इतिहास का प्रयोग किया जाए जो वर्तमान के कारणों को अतीत में खोजता हो। ऐसा विश्लेषणात्मक इतिहास, समय की एक अवधि में, एक एकल संस्कृति या राष्ट्र, एक एकल संस्कृति क्षेत्र या यहाँ तक कि एक एकल महाद्वीप के अध्ययन से विकसित नहीं किया जा सकता था, बल्कि मानव जनसंख्याओं ओर संस्कृतियों के बीच संपर्कों परस्पर क्रियाओं और परस्पर संबंधों के अध्ययन से संभव था।

ऐतिहासिक अध्ययनों ने एक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में सामाजिक और राजनीतिक परिघटनाओं की कारणात्मक व्याख्याओं को ढूँढ़ने के लिए एक या अधिक केस पर ध्यान केंद्रित किया है। एकल केस स्टडीज़ (एकल वृत्त अध्ययन) जैसा कि पिछले खंड में उल्लेख किया गया है, सामान्य वक्तव्य उत्पन्न करने का प्रयास करते हैं जिन्हें अन्य केस पर लागू किया जा सकता है। थेडा स्कोक्पॉल ध्यान दिलाती है कि एक से अधिक केस का प्रयोग करने वाले तुलनात्मक ऐतिहासिक अध्ययन मोटे तौर पर दो श्रेणियों में आते है 'तुलनात्मक इतिहास' और 'तुलनात्मक ऐतिहासिक विश्लेषण'। तुलनात्मक इतिहास का सामान्य रुप से, ढीले तरीके से किसी अध्ययन का उल्लेख करने के लिए प्रयोग किया जाता है, जिसमें राष्ट्र राज्यों, संस्थापक संकुलों, या सभ्यताओं के दो या अधिक ऐतिहासिक प्रक्षेप पथों को एक साथ रखा जाता है। कुछ अध्ययन जो इस शैली में आते हैं, जैसे चार्ल्स, लूई और रिचर्ड टिल्ली की 'द रेबेलियस सेंचुरी 1810–1930, एक विशिष्ट ऐतिहासिक मॉडल की रुपरेखा तैयार करने का प्रयास करते हैं जिन्हें भिन्न राष्ट्रीय संदर्भों के आर-पार लागू किया जा सकता है। अन्य अध्ययन, जैसे राइनहार्ड बेनेडिक्स का 'नेशन बिल्डिंग एंड सिटिज़ेनशिप' और पैरी एंडरसन का 'लिनिएजस ऑफ द रेब्सल्यूटिस्ट स्टेट', तुलनाओं का प्रयोग, मूलरुप से राष्ट्रों या सभ्यताओं के बीच विषमताओं को उजागर करने के लिए करते हैं जिनकी पृथक समष्टियों के रुप में कल्पना की गई है। स्कोक्पॉल स्वयं द्वितीय पद्धति का अनुमोदन करती है, अर्थात् तुलनात्मक ऐतिहासिक विश्लेषण का मूल उद्देश्य 'राष्ट्र राज्यों जैसी बृहत् इकाइयों के लिए अनिवार्य घटनाओं या संरचनाओं के बारे में कारणात्मक, व्याख्यात्मक परिकल्पना का विकास, परीक्षण और शोधन का प्रयास करना है' विशिष्ट परिघटना (उदाहरण के लिए क्राँतियाँ) के बारे में कारणात्मक संबंध को विकसित करने और सामान्यीकरणों को प्राप्त करने के लिए, 'राष्ट्रीय ऐतिहासिक प्रक्षेप पथों के चयनित हिस्सों को तुलना की इकाइयों के रुप में' लेकर वह इसे करता है। ऐसे दो विधियाँ हैं जिनके द्वारा जिस परिघटना की व्याख्या करने का प्रयास किया जा रहा है, उसके संभावित कारणों के साथ मान्य संबंध स्थापित किए जा सकते हैं। जॉन स्टअर्ट मिल द्वारा अपनी कृति 'ए सिस्टम ऑफ लॉजिक' में प्रस्तुत की गई ये विधियाँ हैं (क) सहमति की विधि और (ख) अंतर की विधि। सहमति की विधि के अन्तर्गत, अध्ययन के लिए अनेक केस लिए जाते हैं जिनके बीच परिघटना के साथ-साथ परिकल्पना में प्रस्तावित कारणात्मक कारकों का समुच्चय भी साझा होता है। अंतर की विधि, जिसका प्रतिपादन स्कोक्पॉल ने किया था, केस के दो समुच्चय लेती है : (क) सकारात्मक केस, जिनमें परिघटना के साथ परिकल्पनाकृत कारणात्मक संबंध भी उपस्थित है और (ख) नकारात्मक केस, जिनमें परिघटना के साथ-साथ कारण भी अनुपस्थित है परन्तु अन्य प्रकार से ये केस प्रथम

समुच्चय के समान हैं। फ्रैंच, रुसी और चीनी क्राँतियों के अपने तुलनात्मक विश्लेषण में, अपनी कृति स्टेट्स एंड सोशल **रेवोल्यूषन्स** : ए कंपेरेटिव अनैलिसिस ऑफ फ्राँस, एशिया एंड चाइना, स्कोक्पॉल (1979) में स्कोक्पॉल इन तीनों को सफल सामाजिक क्राँति के सकारात्मक केस के रुप में लेती है और दावा करती है कि ये तीनों अनेक अन्य विषमताओं के बावजूद समरुपी कारणात्मक प्रतिमानों को प्रकट करते हैं। प्रथम केस में कारणात्मक संबंध के बारे में तर्कों को मान्य बनाने के लिए वह नकारात्मक केस के एक सेट को, अर्थात् 1905 की असफल क्राँति, और इंग्लिश, जापानी और जर्मन इतिहासों के चयनित पहलुओं को लेती है। ऐतिहासिक पद्धति के आलोचकों का मानना है कि चूंकि अवरोक्त (बाद-वाली) भारी संख्या में केस का अध्ययन नहीं करती, वह एक सच्चे वैज्ञानिक तरीके से एक निश्चित परिघटना के अध्ययन का अवसर प्रदान नहीं करती। हैरी एक्स्टीन ने, उदाहरण के लिए, तर्क दिया है कि छोटी संख्या के केस पर आधारित सामान्यीकरण 'शब्दकोष के अर्थ में निश्चित रुप से एक सामान्यीकरण होगा'। फिर भी 'कार्यप्रणाली विषयक अर्थ में, सामान्यीकरण' को 'केस की एक बड़ी संख्या को, जो इतनी बडी हो कि सांख्यिकीय विश्लेषण जैसे कुछ निश्चित कठोर परीक्षण प्रक्रियाओं के लिए प्रयोग की जा सके, सम्मिलित करना चाहिए' (हैरी एक्स्टीन, इंटर्नल वॉर, 1964)

बोध प्रश्न 3

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का प्रयोग करें

ii) इकाई के अन्त में अपने उत्तर के लिए संकेतों को देखें

1) प्रयोगात्मक पद्धति क्या है? एक तुलनात्मक ढाँचे के अन्तर्गत राजनीतिक परिघटना के अध्ययन के लिए यह पद्धति कहाँ तक उपयुक्त है?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2) तुलना की विभिन्न पद्धतियाँ क्या हैं? तुलनात्मक राजनीति के अध्ययन में इनमें से प्रत्येक का सापेक्ष लाभ क्या है?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2.5 सारांश

तुलना एक मौलिक मानवीय प्रयास है। जाने या अनजाने हम अपने चारों ओर अनेक वस्तुओं की तुलना करते रहते हैं। राजनीति शास्त्र के विषय में, तुलनात्मक पद्धतियों का प्रयोग करते हुए, न केवल संस्थाओं, प्रणालियों या परिघटनाओं के सामान्य वर्णन या विशेषताओं की व्याख्या की जा सकती है बल्कि राजनीतिक प्रणाली की एक सूक्ष्म भेद-युक्त समझ भी उपलब्ध की जा सकती है–प्रतिमान, समानताएँ और विषमताएँ।

तुलना को राजनीतिक अन्वेषण की एक पद्धति के रुप में प्रयोग करने की प्रक्रिया में, विद्वानों ने अनेक प्रकार की पद्धतियों का प्रयोग किया है जैसे प्रयोगात्मक पद्धति, केस-स्टडी पद्धति, सांख्यिकीय पद्धति, ऐतिहासिक पद्धति इत्यादि। ये पद्धतियाँ वे मौलिक उपकरण और तकनीक हैं जो तुलनावादियों द्वारा आनुभाविक डेटा और परिमाण निर्धारित करने योग्य चरों के माध्यम से राजनीतिक परिघटनाओं के बारे में एक वैज्ञानिक और गहरी व्याख्या की स्थापना के लिए प्रयोग किए जाते हैं। परन्तु, अपने अन्वेषण के लिए उपयुक्त पद्धति की पहचान करना शोधकर्ता (तुलनावादियों) का काम है। यदि एक अकेली पद्धति पर्याप्त न हो, तो एक व्यापक समझ की प्राप्ति के लिए पद्धतियों के सम्मिश्रण का प्रयोग किया जा सकता है।

2.6 मुख्य शब्द

निर्माण : एक निर्माण एक भावात्मक अवधारणा है जिसे एक निश्चित परिघटना की व्याख्या के लिए विशेष रुप से बनाया (या चुना) जाता है। एक निर्माण एक सरल अवधारणा हो सकती है अथवा संबंधित अवधारणाओं के सेट (समुच्चय) का सम्मिश्रण।

कारण-संबंधी (कारणात्मक) व्याख्या : किसी वस्तु को समझने का तरीका, यह मानते हुए कि कुछ तथ्य अन्य तथ्यों के उभरने के कारण बनते हैं, उदाहरण के लिए, अत्यधिक जनसंख्या आवास की समस्या का कारण हो सकती है।

पद्धति : वैज्ञानिक ज्ञान के निर्माण या सिद्धांत प्रस्तुत करने के लिए तकनीकों का एक मानकीकृत और संगठित सेट (समुच्चय)। पद्धतियों को इस प्रकार वर्गीकृत किया जा सकता है : (क) तुलनात्मक (एक से अधिक केस का करते हुए), (ख) संरुपात्मक (एक एकल केस-स्टडी का प्रयोग करते हुए) और (ग) ऐतिहासिक (समय और अनुक्रम का प्रयोग करते हुए)। पद्धति मुख्यतः 'चिंतन के बारे में चिंतन' है।

मॉडल (प्रतिमान) : प्रणाली की समष्टि या एक हिस्से का प्रतिरुप जिसका निर्माण प्रणाली के अध्ययन के लिए किया जाता है। प्रणाली या परिघटनाओं के प्रतिनिधित्व द्वारा एक मॉडल यथार्थ को सरल बना देता है।

सांप्लिंग (प्रतिचयन) : पर्यवेक्षण और सांख्यिकीय अनुमान के उद्देश्य से, 'सांपल' (नमूने) के नाम से पुकारे जाने वाले उपसमुच्चय (सबसेट) को चुनने की एक सांख्यिकीय प्रक्रिया है। उदाहरण के लिए, संभावयता/प्रतिबंधों के कारण हम एक देश की समस्त जनसंख्या का अध्ययन नहीं कर सकते ; अतः हम

जनसंख्या में से प्रतिनिधि नमूनों को पर्यवेक्षण और विश्लेषण के लिए चुनते हैं ताकि उस नमूने से प्राप्त अनुमान को जनसंख्या के लिए सामान्यीकृत किया जा सकता है।

सैद्धांतिक प्रस्ताव : एक कथन (एक सामान्यीकरण के समान जो दो चरों के बीच संबंध की पुष्टि या खंडन करता है। कथन से सामान्य अनुप्रयोग की अपेक्षा की जाती है।

2.7 संदर्भ

दुर्खीम, एमिल, 1984. द डिविज़न ऑफ लेबर इन सोसाइटी, मैक्मिल्लन प्रेस।

हेग, रॉड, मार्टिन हैरप, शॉन ब्रेसलिन, 1993. कंपेरेटिव गवर्नमेंट एंड पॉलिटिक्स, मैक्मिल्लन, लंदन, (तृतीय संस्करण)

मोहन्ती, मनोरंजन, 1975. "कंपेरेटिव पोलिटिकल थ्योरी एंड थर्ड वर्ल्ड सेंसिटिविटि" टीचिंग पॉलिटिक्स, संख्या, 1 और 2।

सारटोरी, जियोवान्नी, 1994. "तुलना, क्यों और कैसे", माटेइ दोगन और अली कज़ानसिगिल (सं), कंपेरिंग नेशन्स, कॉन्सेप्टस, स्टैटजीज़, सबस्टेंस, हलैकवेल, ऑक्सफोर्ड।

स्वॉनसन गय ई. , 1971. "फ्रेमवर्क्स फॉर कंपेरेटिव रिसर्च : स्ट्रकचरल ऐंथ्रोपॉलजी एंड द थ्योरी ऑफ ऐक्शन", आइवन वैलियर (सं) कंपेरेटिव मेथड्स इन सोशियॉलजी, बर्कले।

स्मेलसर, नील जे. 1976, कंपेरेटिव मेथड्स इन द सोशल साइन्सेज, प्रेंटिस हॉल, एंगिलवुड़ क्लिफ्स।

स्कोक्पॉल, थेडा, 1979, स्टेट्स एंड सोशल रेवोल्यूशन्स : ए कंपेरेटिव अनैलिसिस ऑफ फ्राँस, एंशिया एंड चाइना, केंब्रिज प्रेस।

टॉकविल, अलेक्स-डी, 1835, डेमॉक्रेसी इन अमेरिका : खंड 1, (पुनर्मुद्रण 2002), यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रेस।

टॉकविल, अलेक्स-डी, 1856, द ओल्ड रेजीम एंड द रेवोल्यूशन, हार्पर ब्रदर्स, न्यू यॉर्क।

वुल्फ, एरिक आर, 1982. यूरोप एंड द पीपिल विदाउट हिस्ट्री यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस।

2.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) पद्धति आपेक्षिक सुगमता के साथ किसी कार्य को करने या किसी वस्तु को निष्पादित करने का उपयोगी तौर-तरीका है। तुलनात्मक राजनीति के क्षेत्र में, सामाजिक और राजनीतिक विश्लेषण के लिए विद्वानों ने अनेक प्रकार की पद्धतियों का प्रयोग किया है। पद्धतियों का प्रयोग, राजनीतिक प्रक्रिया,

प्रणालियों या परिघटनओं के अध्ययन/अनुसंधान के दौरान परिकल्पनाओं को उत्पन्न करने, संकल्पनात्मक नवाचार और सिद्धांत सूत्रीकरण के लिए किया जाता है।

बोध प्रश्न 2

1) तुलना के साथ अध्ययन सामाजिक.वैज्ञानिक अनुसंधान में विशाल महत्व प्रदान करता है। तुलनावादियों ने हमेशा दावा किया है कि समाज शास्त्रों में तुलनाओं के माध्यम से वैज्ञानिक अनुसंधान उपार्जित किया जा सकता है। तुलनात्मक राजनीि के विषय में तुलनावादी केवल तुलना नहीं करते बल्कि राजनीतिक जीवन के बारे में परिशुद्ध और यथासंभव जानकारी प्राप्त करने के लिए तुलना करते हैं–राजनीतिक संस्थाओं, प्रणालियों या परिघटनाओं के प्रतिमानों, उनके बीच और उनके मध्य में समानताओं और विषमताओं का।

2) तुलनात्मक राजनीति में प्रयोगात्मक पद्धति का प्रयोग दो समतुल्य स्थितियों के बीच कारण.संबंधी या कारणात्मक संबंधों को स्थापित करने के लिए किया जाता है। प्रयोगात्मक पद्धति शोधकर्ता को उन निश्चित स्थितियों या रीति को स्थापित करने में सक्षम बनाती है जिसके अन्तर्गत एक के द्वारा दूसरी उत्पन्न होती है, अथवा दूसरी को प्रभावित करती है। प्रयोगात्मक पद्धति का एक महत्वपूर्ण पहलू ये है कि वैज्ञानिक अन्वेषण के लिए यह लगभग सर्वाधिक आदर्श पद्धति ळें

बोध प्रश्न 3

1) तुलनात्मक राजनीति के अध्ययन में अनेक प्रकार की पद्धतियों का प्रयोग किया जाता है जैसे प्रयोगात्मक पद्धति, केस.स्टडी पद्धति, ऐतिहासिक पद्धति, सांख्यिकीय पद्धति इत्यादि। इन सभी का लक्ष्य वैज्ञानिक व्याख्या करना है। प्रत्येक का एक अलग प्रसंग में अपना विशेष लाभ है। प्रयोगात्मक पद्धति का प्रयोग सामान्य रुप से दो स्थितियों के बीच संबंध की स्थापना के लिए किया जाता है, जबकि केस.स्टडी पद्धति का प्रयोग एक निश्चित केस (मामले) का गहराई से अध्ययन के लिए किया जाता है। दूसरी ओर, सांख्किीय पद्धति उन केस (मामलों) में निश्चित लाभ प्रदान करती है, जिनका संबंध वर्गों और चरों से हो जो मात्रात्मक या मापनीय होते हैं या डेटा (आंकडों) के अंकों के माध्यम से जिनका प्रतिनिधित्व किया जा सकता है। ऐतिहासिक पद्धति एक अन्य पद्धति है जिसे उपरोक्त पद्धतियों से अलग किया जा सकता है जो मूल रुप से उस अध्ययन में महत्वपूर्ण है जिसके लिए ऐतिहासिक व्याख्याओं की आवश्यकता होती है।